तृतीयखण्डम्

६३. श्रीधर्मघोषाख्यानम्

प्रणम्य त्रिजगद्देवं श्रीजिनं धर्मदेशकम्। वक्ष्ये श्रीधर्मघोषाख्यमुनीन्द्रस्य कथानकम् ॥१॥
चम्पायां चैकदा कृत्वा सुधीर्मासोपवासकम्। धर्मघोषो मुनिः पश्चाद्धर्ममूर्त्तिर्गुणाकरः ॥२॥
गोष्ठे तु पारणां कृत्वा संचचाल स्वलीलया। नष्टे मार्गे तदा भूरिहरिताङ्कुरितोपरि ॥३॥
आगच्छन्स तृषाक्रान्तो गंगातीरे मनोहरे। वटवृक्षतले यावद्धि-श्रान्तोसौ मुनीश्वरः ॥४॥
गंगादेवी तदा वीक्ष्य तं मुनिं तपसां निधिम्। प्रासुकं निर्मलं तोयं कुंभे कृत्वा मनोहरम् ॥५॥
समानीय प्रणम्योच्चैः संजगादेति भो मुने। कृपां कृत्वा पिबेदं मे सज्जलं भुवनोत्तमम् ॥६॥
तेनोक्तं श्रीमुनीन्द्रेण नास्माकं कल्पते शुभे। ततोऽसौ देवता गत्वा शीघ्रं पूर्वविदेहकम् ॥७॥
केवलज्ञानिनं नत्वा भक्तितः संजगौ तदा। न पीतं हेतुना केन जलं मे मुनिना विभो ॥८॥
ततः श्रीकेवली प्राह जिनेन्द्रो भुवनार्चितः। मुग्धे देवकराहारो मुनीनां नैव कल्पते ॥९॥
गंगादेवी तदागत्य सुगन्धीकृतदिङ्मुखाम्। समन्तात्तन्मुनेः शीततोयवृष्टिं चकार सा ॥१०॥

---

६३. धर्मघोष मुनि की कथा

सत्य धर्म का उपदेश करने वाले अतएव सारे संसार के स्वामी जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर श्रीधर्मघोष मुनि की कथा लिखी जाती है ॥१॥

एक महीना के उपवास से धर्ममूर्ति श्रीधर्मघोष मुनि एक दिन चम्पापुरी के किसी मुहल्ले में पारणा कर तपोवन की ओर लौट रहे थे। रास्ता भूल जाने से उन्हें बड़ी दूर तक हरी-हरी घास पर चलना पड़ा। चलने में अधिक परिश्रम होने से थकावट के मारे उन्हें प्यास लग आई, वे आकर गंगा के किनारे एक छायादार वृक्ष के नीचे बैठे गए। उन्हें प्यास से कुछ व्याकुल से देखकर गंगा देवी पवित्र जल का भरा एक लोटा लेकर उनके पास आई वह उनसे बोली-योगिराज, मैं आपके लिए ठंडा पानी लाई हूँ, आप इसे पीकर प्यास शान्त कीजिए। मुनि ने कहा-देवी, तूने अपना कर्तव्य पूरा किया, यह तेरे लिए उचित ही था; पर हमारे लिए देवों द्वारा दिया गया आहार-पानी काम नहीं आता। देवी सुनकर बड़ी चकित हुई वह उसी समय इसका कारण जानने के लिए विदेह क्षेत्र में गई और वहाँ सर्वज्ञ भगवान् को नमस्कार कर उसने पूछा-भगवान्, एक प्यासे मुनि को मैं जल पिलाने गई, पर उन्होंने मेरे हाथ का पानी नहीं पिया; इसका क्या कारण है? तब भगवान् ने इसके उत्तर में कहा-देवों का दिया आहार मुनि लोग नहीं कर सकते। भगवान् का उत्तर सुन देवी निरुपाय हुई तब उसने मुनि को शान्ति प्राप्त हो, इसके लिए उनके चारों ओर सुगन्धित और ठण्डे जल की वर्षा शुरू की। उससे मुनि को शान्ति

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

तदासौ धर्मघोषाख्यो मुनीन्द्रो धर्मतत्त्ववित्। समाधानं समासाद्य शुक्लध्यानेन धीरधीः ॥११॥
केवलज्ञानमुत्पाद्य सुरासुरसमर्चितः। मुक्तिं संप्राप्तवान्स्वामी सोस्माकं सत्सुखं क्रियात् ॥१२॥

स श्रीकेवललोचनोतिचतुरो भव्यौघसम्बोधको
लोकालोकविलोकनैकनिपुणो देवेन्द्रवृन्द्रार्चितः।
मिथ्यामोहमहान्धकारतरणिश्चिन्तामणिः प्राणिनां
कुर्यान्मे भवतां च निर्मलसुखं श्रीधर्मघोषो जिनः ॥१३॥

इति कथाकोशे धर्मघोषमुनेराख्यानं समाप्तम्।

६४. श्रीदत्तस्याख्यानम्

केवलज्ञानसल्लक्ष्मीनायकं श्रीजिनेश्वरम्। नत्वा देवकृते कष्टे वक्ष्ये श्रीदत्तवृत्तकम् ॥१॥
इलावर्द्धनसत्पुर्यां राजाभूज्जितशत्रुवाक्। इला राज्ञी तयोः पुत्रः श्रीदत्तः संबभूव च ॥२॥
अयोध्याभूपतेरंशुमतः पुत्रीं स्वयंवरे। सुधीरंशुमतीं पूतां श्रीदत्तः परिणीतवान् ॥३॥
अंशुमत्या सहैकस्तु समायातः शुकस्तदा। स पक्षी तु तयोर्द्यूते स्वगेहे रममाणयोः ॥४॥
श्रीदत्तस्य जये रेखामेकामंशुमतीजये। द्वे रेखे संददात्येव पक्षिणश्चापि वञ्चकाः ॥५॥

प्राप्त हुई। इसके बाद शुक्लध्यान द्वारा घातिया कर्मों का नाश कर उन्होंने केवलज्ञान प्राप्त किया। स्वर्ग के देव उनकी पूजा करने को आए। अनेक भव्य-जनों को आत्म-हित के रास्ते पर लगा कर अन्त में उन्होंने निर्वाण लाभ किया ॥२-१२॥

वे धर्मघोष मुनिराज आपको तथा मुझे भी सुखी करें, जो पदार्थों की सूक्ष्म स्थिति देखने के लिए केवलज्ञानरूपी नेत्र के धारक हैं, भव्य जनों को हितमार्ग में लगाने वाले हैं, लोक तथा अलोक के जानने वाले हैं, देवों द्वारा पूजित हैं और भव्य-जनों के मिथ्यात्व, मोहरूपी गाढ़े अन्धकार को नाश करने के लिए सूर्य हैं ॥१३॥

६४. श्रीदत्त मुनि की कथा

केवलज्ञानरूपी सर्वोच्च लक्ष्मी के जो स्वामी हैं, ऐसे जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर श्रीदत्त मुनि की कथा लिखी जाती हैं, जिन्होंने देवों द्वारा दिये हुए कष्ट को बड़ी शान्ति से सहा ॥१॥

श्रीदत्त इलावर्द्धनपुरी के राजा जितशत्रु की रानी इला के पुत्र थे। अयोध्या के राजा अंशुमान की राजकुमारी अंशुमती से इनका ब्याह हुआ था। अंशुमती ने एक तोते को पाल रखा था। जब ये पति-पत्नी विनोद के लिए चौपड़ वगैरह खेलते तब तोता कौन कितनी बार जीता, इसके लिए अपने पैर के नख से रेखा खींच दिया करता था। पर इसमें यह दुष्टता थी कि जब श्रीदत्त जीतता तब तो यह एक ही रेखा खींचता और जब अपनी मालकिन की जीत होती तब दो रेखाएँ खींच दिया करता था। आश्चर्य है कि पक्षी भी ठगाई कर सकते है। श्रीदत्त तोते की इस चालाकी को कई बार तो सहन कर

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY